B.A. Part I — प्रो० रणधीर कुमार सिंह ①
समाजशास्त्र विभाग, पटना कॉलेज | M-9546991571

प्रश्न — "संस्कृति" शब्द का आप क्या अर्थ समझते हैं? भौतिक तथा अभौतिक संस्कृति के भेद को भी स्पष्ट करें।"

उत्तर :→ विभिन्न विद्वानों ने संस्कृति की विभिन्न व्याख्याएँ की है।

Taylor के अनुसार → "Culture is what complex whole which includes knowledge, belief, art, morals, law, custom and any other capabilities acquired by man as a member of society."

Malinowski के अनुसार → "As the handiwork of man as the medium through which he achieves his ends."

Spencer के अनुसार → "As the super-organic environment as distinguished from the inorganic, or physical, and from the organic, the world of plants and animals."

Green के अनुसार "ज्ञान, विश्वास और प्रथाओं से समाज द्वारा स्वीकृत आदर्श स्वरूप और यह ज्ञान के समय के साथ साथ में बनती और बिगड़ती रहती है, को संस्कृति कहते हैं।" मैकाईवर के अनुसार "हमारे रहने सहने के ढंग, हमारे विचार सामाजिक सम्मिलन, साहित्य धर्म मनोरंजन आदि में हमारी संस्कृति का रूप मिलता है।" Graham Wallace ने संस्कृति को विचारों, पद्धतियों और वस्तुओं का संग्रह कहा है। यह हमें अपनी पूर्वज पीढ़ी से शिक्षा द्वारा प्राप्त heritage है जो genes द्वारा अपने आप प्राप्त होने वाली जैविकी विरासत से भिन्न प्रकार की होती है।

इन परिभाषाओं से यह स्पष्ट हो जाती है कि समाजशास्त्र में संस्कृति शब्द का प्रयोग सामान्य अर्थों में न होकर विशिष्ट अर्थों में होता है। सामान्यतः लोग पढ़े लिखे व्यक्ति को ही सुसंस्कृत तथा अनपढ़ व्यक्तियों को कह देते हैं। समाजशास्त्र में इन शब्दों का हमारा सम्बन्ध ऐसे अर्जित व्यवहारों से है जिनमें समाज अन्य सदस्य भी भागीदार हो और जिनका सदस्यों में परस्पर प्रसार हो सकता है अर्थात व्यवहार वह सीखता है और जो ज्ञान वह सीखता है उसे ही हम संस्कृति कहते हैं।

बातचीत करना, खाना, पीना, गाना, नाचना आदि

संस्कृति की कोटि में ही आते हैं। परन्तु व्यवहार व्यक्ति के केवल अपने ही नहीं होते वरन उनमें अन्य लोग भी भागीदार होते हैं। यह उसे स्कूल के अध्यापक, माता पिता अथवा दोस्तों आदि द्वारा प्रेषित किये गये होते हैं अतः संस्कृति द्वारा सीखे हुए व्यवहारों को कहा जाता है। जिनमें समूह के अन्य सदस्य भी भागीदार हों, जो अन्य सदस्यों को प्रेषित किया जा सके।

"संस्कृति" शब्द को भली-भांति समझने के लिये 'सभ्यता' तथा संस्कृति में जो भेद है उसे समझ लेना चाहिए। कुछ समाजशास्त्री संस्कृति को भौतिक (material) तथा अभौतिक दो भागों में बांट देते हैं। भौतिक। से अभिप्राय घर, रेडियो, पहनने के कपड़े की बनी चीजें बर्तन, औजार, पुस्तकें और तस्वीरें आदि ठोस वस्तुएं हैं और अभौतिक का अभिप्राय स्वयं मानव द्वारा रचित ऐसी कृतियाँ हैं, जो केवल भावात्मक (abstract) हो जैसे भाषा, साहित्य, विज्ञान, कला न्यायविधान तथा धर्म आदि।

गिलिन और गिलिन जैसे समाजशास्त्रियों ने व्यवहार अथवा 'संस्कृति' शब्द का प्रयोग ठोस प्रमाणों के रूप में होने वाले और Cultural Equipments शब्द का प्रयोग ठोस वस्तु के लिये किया है। मैकाइवर ने civilisation का प्रयोग ~~ठोस वस्तु के लिये किया है।~~ उपयोगितावादी वस्तुओं के लिये - ऐसे सभी कलपुर्जों मशीनों यान्त्रिक व्यवस्था और भौतिक साधनों के लिये किया है जिन्हें अविष्कार मानव ने अपनी जीवन व्यवस्था पर नियंत्रण प्राप्त करने के लिये किया है। इन वस्तुओं की हमें आवश्यकता है क्योंकि उन्हें साधन के रूप में प्रयोग करके हम किसी लक्ष्य अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेते हैं। सामान्य रूप से मिलता है। इन अर्थों में सभ्यता के अन्तर्गत रेडियो टेलीफोन, चुनाव पत्रियाँ डालने के बक्स (Ballot Box) रेलें, सड़के, स्कूल, बैंक और दफ्तर आदि सभी आ जाते हैं।

संस्कृति की व्याख्या के लिये कुछ निम्न बातें ध्यान में रखी जा सकती हैं:-

1. संस्कृति व्यवहार का सीखा हुआ तरीका है यह मानव स्वाभाविक ही नहीं है।
2. संस्कृति मानव की व्यक्तित्व से स्वतन्त्र न होकर सामाजिक
3. संस्कृति आदर्शात्मक है। यह मानव व्यवहार के आदर्श स्व का प्रतिनिधित्व करती है।

④ संस्कृति से मानव-मात्र (3) की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है।
⑤ संस्कृति में अनुकूलन की विशेषता है।
⑥ संस्कृति की अन्य विशेषता सम्मिश्रण है।

इस प्रकार संस्कृति का सामाजिक, आदर्शात्मक और प्राप्त कहा जा सकता है। यह मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। यह मानव का एक विशेष गुण है और उसकी सामाजिक आवश्यकता का उदाहरण है।

—X—